राज
कॉमिक्स
विशेषांक
मूल्य30.00 संख्या 650
शेषनाग
नागराज
नागराज
का एक जम्बो
पोस्टर मुफ्त
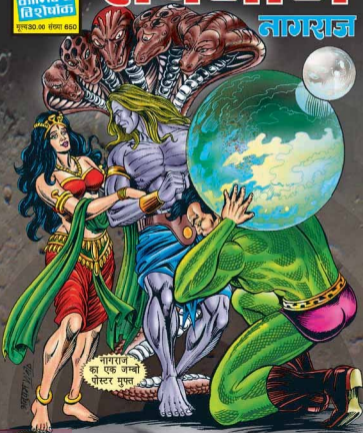
जिनकी गोद के जगतपालक विष्णु भगवान शयन करते हैं, जिनके पांच फनों में पांच प्रलयंकारी विष वास करते हैं, जो पृथ्वी को अपने ऊपर धारण करके उसकी रक्षा करते हैं ऐसे हैं हमारे पूज्य देवनाग....
शेषनाग
संजय गुप्ता की पेशकश
कथाः जॉली सिन्हा
चित्रः अनुपम सिन्हा
इंकिंगः विनोद कुमार
सुलेख व रंगः सुनील पाण्डेय
संपादकः मनीष गुप्ता
"हमारे अगले पूज्य देवनाग हैं नागराज वासुकि..."

देवता और दानवों द्वारा किए गए समुद्र मंथन में मथनी की रस्सी का कार्य नागराज वासुकि ने ही किया था! हम नागों का इतिहास बहुत प्राचीन और गौरवशाली है! कल तुम्हारा राज्यभिषेक होने जा रहा है! कल से तुम नागद्वीप के नए राजा होगे!
और नागद्वीप का राजा हमेशा से ही पृथ्वी के सभी नागों का सम्राट होता है! इसीलिए तुमको हमारे गौरवशाली इतिहास से परिचित होना ही चाहिए!
कौन सा इतिहास?
गौरवशाली इतिहास या बनाया हुआ झूठा इतिहास?
ये क्या कह रहे हो, कुमार विषांक! हम नागों का इतिहास एकदम सच्चा है!
तो फिर ये क्या है? विज्ञान कहता है कि पृथ्वी अंतरिक्ष में तैरती हुई सूर्य के चक्कर लगाती है! उनके पास इस बात के सुबूत भी हैं!
और आप कहते हैं कि पृथ्वी शेष नाग के फन पर टिकी है! वर्ना वह क्षीर सागर में डूब जाती!
आप ही बताइए मैं सच किसको मानूं?

विज्ञान सच कहता है विषांक! लेकिन हम भी झूठ नहीं बोल रहे हैं!
ये दोनों बातें एक साथ सही कैसे हो सकती हैं?
लेकिन ऐसा वे पृथ्वी के केन्द्र में रहकर कर रहे हैं! अगर लावे के सागर पर तैरती पृथ्वी के भूखंडों को वे न उठाए रहें तो पृथ्वी के भूखंड धीरे-धीरे लावे के सागर में डूबते जाएंगे और जल का स्तर ऊपर उठता जाएगा! अंत में पृथ्वी के भूखंड जल समाधि ले लेंगे और थल पर रहने वाले हम जैसे प्राणी समाप्त हो जाएंगे!
ध्यान से सुनो विषांक! हमारे पुराणों में जो लिखा गया है कि शेषनाग ने पृथ्वी को जल में डूबने से बचाया हुआ है, वह सत्य है! लेकिन चित्रकारों ने इस सत्य को अपनी कल्पना से बनाया है! शेषनाग अभी भी इस पृथ्वी पर ही मौजूद हैं! उन्होंने धरती को अपने फनों पर उठाया भी हुआ है!
इस सत्य में कलाकारों ने अपनी कल्पना को जोड़कर वह चित्र बनाया है जिसको तुम देखते हो!
सच में? यानी विज्ञान भी सही है और हम भी!
"जब तक शेषनाग रहेंगे पृथ्वी जल में नहीं डूबेगी-"
यानी नागों ने ही थलचर जीवों को बचाया हुआ है! हमारा इतिहास सचमुच गौरवशाली है महात्मन्!
समुद्र में गश्त के दौरान सावधान रहना सीखो नाविक!
सावधान ही हूं सर! वैसे भी परमाणु शस्त्रों से युक्त इस आणविक पनडुब्बी के सामने तो मूर्ख ही आएगा!
NS
राडार पर कुछ दिख रहा है, सर! तीन वस्तुएं तेजी से हमारी तरफ बढ़ रही हैं! पता नहीं चल रहा है कि ये मिसाइलें हैं या...

... जीवित प्राणी!
ये तो तीन आदमी जैसे सांप है! कोई अजीबो गरीब समुद्री जीव!
शायद ये हमको हमलावर और या फिर अपना भोजन समझकर अटैक कर रहे हैं!
'शॉक शील्ड' को एक्टीवेट करो!

वे पनडुब्बी की दीवार से चिपककर झटका खा रहे हैं एडमिरल!
गुड! जल्दी ही ये मंद प्राणी समझ जाएंगे कि स्टील इन मोटी दीवारों को छूना तक नुकसानदायक है!
पर... सर...सर! ये तो शॉक पाकर और ताकतवर हो रहे हैं!
तीनों जीव एकाएक गायब हो गए हैं, एडमिरल! शायद वे समझ गए हैं कि...

... अंदर आने की कोशिश करना बेकार है!
ये तो अंदर आ गए!
बिना कोई छेद करे!
पर कैसे?
ही ही ही!
हा हा हा!
पर ये चाहते क्या हैं?
ये कुछ बोलें तो हम जानें!
हम मैसेज नहीं भेज सकते, तो मुझे खुद बाहर जाकर ये सूचना नौसेन्य अधिकारियों तक पहुंचानी होगी! मदद बुलानी होगी!
वर्ना आणविक पनडुब्बी पर कब्जा करके ये प्राणी कुछ भी कर सकते हैं!
अरे! इन्होंने तो तोड़फोड़ मचा दी!
कुछ भी!
पर क्या मैं इतनी गहराई से सतह तक जिंदा पहुंच पाऊंगा!
ये हमारे संचार यंत्रों को खराब कर रहे हैं!
पनडुब्बी का एक बहादुर नाविक अपनी जान पर खेलकर, 'इमर्जेंसी हैच' द्वारा बाहर आने में सफल हो गया था-

और मदद ज्यादा दूर नहीं थी-
अपनी सर्प नौका को और तेज चलने का आदेश दो नागराज! हमको पहले ही देर हो चुकी है!
कहीं हमारे पहुंचने से पहले ही विषांक का राज्याभिषेक न हो जाए!
पूरे ब्रह्मांड के सर्प वहां पर पहुंचेंगे! लेकिन अगर नागराज ही नहीं होगा तो समारोह का मजा फीका हो जाएगा।
चिन्ता मत करो सौडांगी! हम समय पर पहुंच जाएंगे! वैसे भी विषांक हमारे बगैर राज्याभिषेक नहीं कराएगा!
महात्मा कालदूत के सामने उसकी एक भी जिद नहीं चलेगी, नागराज! इसीलिए समय पर पहुंचने की कोशिश करो!
यह क्या?

ओह! अह! शुक्र है कि तुम मुझे मिल गए नागराज!
आप तो नेवी के कैडेट लगते हैं! आसपास तो कोई जहाज नजर नहीं आ रहा है! फिर आप कहां से आ रहे हैं?
अरे! ये तो बेहोश हो गए!
कुछ इच्छाधारी नागों ने एक आणविक पनडुब्बी पर कब्जा कर लिया है! उनका इरादा नेक तो नहीं हो सकता! मुझे उनको रोकने जाना ही पड़ेगा!
पन... हफ़... पनडुब्बी से! हमारी एक न्यूक्लियर पनडुब्बी नीचे समुद्र में है! हफ़! परंतु उस पर कुछ जादुई शक्ति वाले नागों ने हमला कर दिया है! हफ़! आदमियों जैसे नागों ने! आऽऽऽह!
लेकिन विषांक का राज्याभिषेक?
एक आणविक पनडुब्बी के खतरे से दुनिया को बचाना ज्यादा जरूरी है सौडांगी! राज्याभिषेक तो मेरे बगैर भी हो सकता है!
कुछ ही पलों के बाद एक लंबी सांस लेकर नागराज समुद्र की छाती को चीरता हुआ नीचे उतर रहा था—
मेरे शरीर में समा जाओ सौडांगी!
और सर्प नौका, तुम नाविक को सुरक्षित तट तक पहुंचा दो!
वह रही पनडुब्बी!

धामन नागराज आ रहा है! अब क्या होगा?
कहीं ये अंदर आ गया तो?
तो फिर ये अंदर मरेगा।
पर घबरा मत!
नागराज के पास मेरे जैसी कोई शक्ति नहीं है। यह दीवारों को पार करके अंदर आ ही नहीं सकता।
तू अब ध्यान से सुन! या तो हमको आणविक मिसाइलों को चलाने का रास्ता बता, या फिर हम तुझको इस दुनिया से जाने का रास्ता दिखा देंगे!
बताता हूं! बताता हूं! इस चाबी को इस लॉक में डालना पड़ता है! फिर 2222 का कोई बटन दबाना पड़ता है!
फिर निशाने को सेट करके लाल बटन दबाना पड़ता है!
तब मिसाइलें निशाने के लिए चल पड़ती हैं!
MISSILE LOC

ये आपने क्या किया सर? आणविक मिसाइलों से ये कहीं पर भी तबाही मचा सकते हैं!
मैंने इनको जो प्रोसेस बताई है वह मिसाइलें दागने के लिए नहीं, बल्कि मिसाइलों को लॉक करने के लिए है!
कि अगर हम मर गए तो फिर इनका इस पनडुब्बी पर पूरी तरह से कब्जा हो जाएगा!
ये झूठ तो मैंने सिर्फ थोड़ा सा समय हासिल करने के लिए बोला है!
समय हासिल करके हमें क्या मिलेगा सर?
नागराज!
नागराज को अंदर आने के लिए समय चाहिए!
लेकिन इससे होगा क्या सर? ये जल्दी ही समझ जाएंगे कि हमने इनको गलत सूचना दी है! फिर तो हमें इनको सच बताना ही पड़ेगा, वर्ना ये हमें मार डालेंगे!
मैं सैनिक, मौत से नहीं डरते, नाविक! मुझे मौत का डर नहीं है! मुझे इस बात का डर है!
और जब नागराज अंदर आ जाएगा तो हम ये लड़ाई बिना लड़े ही जीत जाएंगे!
नागराज पनडुब्बी के अंदर पहुंचने की जी तोड़ कोशिश कर रहा था-
ओफ़! ये पनडुब्बी तो चारों तरफ से सील बंद है! वह नाविक जिस 'हैच' से आया था, वह भी बंद हो चुका है! और उसे सिर्फ अंदर से ही खोला जा सकता है!
और सबसे बड़ी मुसीबत यह है कि मेरे फेफड़ों की ऑक्सीजन तेजी से खत्म हो रही है!
नागराज, न तो पनडुब्बी के अंदर घुस पा रहा था, और न ही उसके पास सतह तक जाने का वक्त बचा था-

जबकि उसका बेसब्री से इंतजार कहीं और हो रहा था-
चलो, कुमार विषांक! अब ये जिद छोड़ भी दो! राज्याभिषेक का मुहूर्त बीता जा रहा है!
पूरे ब्रह्मांड के जल, थल और नभ सर्प यहां तक कि दिव्य और देव सर्प भी नागद्वीप पहुंच चुके हैं!
लेकिन नागराज नहीं पहुंचा है! बगैर नागराज के मैं राज्याभिषेक नहीं कराऊंगा!
देख, विषांक! जिद करेगा तो पिटेगा! नागराज तो देर सबेर आ ही जाएगा, लेकिन ऐसा शुभ मुहूर्त अब दो सौ साल बाद ही आएगा!
तो दो सौ साल तक इंतजार कर लीजिए दादा कालदूत!
रुक तो! अरे रुक, विषांक!
इधर विषांक नागराज का इंतजार कर रहा था-

और उधर मौत नागराज के इंतजार में थी-
आह! दम घुट रहा है! आंखों के आगे अंधेरा छा रहा है! अगर कुछ ही सेकंडों में अंदर जाने का रास्ता न मिला तो मेरा अंत निश्चित है!
पर अंदर जाऊं किधर से? ये आणविक पनडुब्बी जिस धातु मिश्रण से बनी है उसको तोड़ पाना मेरे लिए तो असंभव है!
नागराज की जान के साथ-साथ-
पनडुब्बी में मौजूद नाविकों की भी जान जाने वाली थी-
तूने जैसा बताया हमने वैसा ही किया, लेकिन मिसाइल नहीं चली! यानी तूने हमसे झूठ बोला!
अब ये जुबान और कुछ नहीं बोलेगी! हम अपना काम तेरी मदद के बगैर भी पूरा कर लेंगे!
तुम्हारे काम के बारे में तो मैं नहीं जानता...
...लेकिन तुम सबका समय जरूर पूरा हो चुका है!
ना... नागराज! तू अंदर कैसे आ गया?
अंदर आने के सारे रास्ते तो बंद हैं!
सारे रास्ते कभी बंद नहीं होते! एक न एक रास्ता जरूर खुला रहता है! और इस मामले में वह रास्ता पेरिस्कोप के शीशे का था!

मुझे अपने शरीर को इच्छाधारी कणों में बदलकर अंदर आने के लिए सिर्फ एक मामूली सा सुराख चाहिए था! और उस छेद से अंदर आने के बाद...
...मैंने ध्वंसक सर्पों की मदद से शीशे को गलाकर उस सुराख को भर दिया!
अब मेरे सवाल का जवाब दो! यह तो स्पष्ट है कि तुम जल सर्प हो! लेकिन तुम इस पनडुब्बी को कब्जे में लेना क्यों चाहते हो?
ये 'पनडुब्बी' हमारे प्रतिबंधित क्षेत्र में आ गई है नागराज! और इस क्षेत्र में आने वाली किसी भी बाहरी वस्तु को हम अपने कब्जे में कर लेते हैं!
ऐसा जलसर्प राज का आदेश है!
अगर ये सच है तो तुम मुझसे मिसाइल दागने का तरीका क्यों पूछ रहे थे?
हमको स्पष्ट आदेश मिले हैं नागराज! हम इनको जलसर्पराज के आदेश के बगैर नहीं छोड़ सकते!
ठीक है! मैं अभी जाकर उनसे बात कर लेता हूं!
तब तक तुम इन मानवों के साथ सम्मान से पेश आओ!
हम इस युद्ध यंत्र की विनाश-क्षमता को जानना चाहते थे!
मैं अभी जहां जा रहा हूं, वहां पर तुम्हारे महाराज महाव्याल भी मुझे मिलेंगे! मैं उनसे बात कर लूंगा! फिलहाल तुम इनको छोड़ दो!
नागराज का यह उसूल था-
कि वह दूसरे राज्यों के कानून में दखल तब तक नहीं देता था-

जब तक कि उसको यह भरोसा न हो जाए कि उसका सामना राज्य के कानून के रखवालों से नहीं-
बल्कि उस राज्य का कानून तोड़ने वालों से हो रहा है-
?
तुम्हारे हाथ पर ये निशान! मैं इस निशान को पहचानता हूं!
ये निशान उन कैदियों के हाथ में दागा जाता है जो जल सर्प देश के दुर्दान्त अपराधी होते हैं!
तुम जरूर जल सर्प राज की अनुपस्थिति का फायदा उठाकर कैद से निकल भागे हो।
और बदला लेने के लिए इस विनाशकारी पनडुब्बी को हथियाना चाहते हो।
अगर तू ऐसा समझता है तो ऐसा ही सही! लेकिन तेरे समझने से कोई फर्क नहीं पड़ता, नागराज!
हमको जो काम दिया गया है, हम उसको पूरा करके ही रहेंगे!
और तू हमें रोक नहीं सकता!
तुम इनसे निपटो, नागराज! तब तक हम 'मेनडेक' पर जाकर पनडुब्बी को सतह तक ले जाने की कोशिश करते हैं!
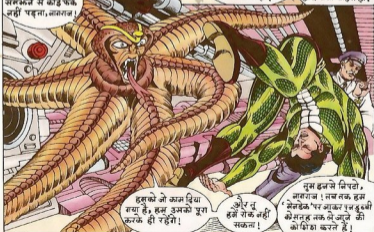
ऐसा हम नहीं होने देंगे! उधर नागराज मरेगा और इधर तुम सभी मानव मरोगे!
सौडांगी, शीतनाग! तुम जाकर नाविकों की रक्षा करो!
इस अष्टपाद सर्प से मैं निपट लूंगा!
धड़ाक
हा हा हा! मुझसे निपटेगा नागराज? बगैर मेरी शक्तियां जाने? अष्टपाद सर्प तुझको एक-एक करके अपनी शक्तियां दिखाएगा! और मेरी हर शक्ति तुझको तेरी मौत के और करीब ले जाएगी!
आऽऽऽह! इसका शरीर तो ठोस मशीनों के आरपार हो गया!

अरे! कहां गायब हो गया, अष्टपाद सर्प?
मैं यहां हूं नागराज!
चोट से तुझ पर बेहोशी छा रही है नागराज! अब मैं तुझको दो टुकड़ों में चीर डालूंगा! और ये बेहोशी मौत की नींद में बदल जाएगी!

कहानी 19 पेज से जारी

सौडांगी और शीतनागसर्प को भी बराबर की टक्कर मिल रही थी-
आऽऽऽह! ये मामूली शक्ति वाले जलसर्प नहीं हैं!
अगर मामूली होते तो ऐसे काम के लिए हमको भेजा ही नहीं जाता!
वैसे अगर ये बात तुम्हारे भेजे में घुस गई है तो भाग लो! वर्ना हमारे वार तुम्हारे भेजे में घुसकर इसको फाड़ डालेंगे!
ओऽऽफ्! इन मुसीबतों को काबू में लाने में समय लगेगा!
पर... ये क्या?
अगर मुझको नक्शों का थोड़ा सा भी ज्ञान है तो इस यंत्र में निशाना नागद्वीप पर सधा है! पर क्यों?
अब तो इन सर्पों को काबू में करके इसका कारण जानना ही पड़ेगा!
आऽऽह!
क्या हुआ?
इन प्राणियों ने कंट्रोल्स के साथ कुछ छेड़ छाड़ की थी!
उसके कारण मिसाइलें जाम होने के साथ-साथ 'एक्टीवेट' भी हो गई हैं!

इससे होगा क्या?
दो मिनटों के अंदर-अंदर मिसाइलें फट जाएंगी, और इस पनडुब्बी के साथ-साथ हमारे भी चीथड़े उड़ जाएंगे!
नागराज तक भी कैप्टेन की आवाज पहुंच गई थी-
इस लड़ाई को जल्दी खत्म करना होगा!
और इसका सबसे अच्छा और तेज तरीका है...
...इसकी भुजाओं को काट देना!
अरे! इसकी भुजाएं तो फिर से उग रही हैं!
तू मेरी शक्तियों को धीरे-धीरे समझ रहा है नागराज!
लेकिन अभी बहुत कुछ समझना बाकी है!
आऽऽह! इसकी कटी भुजाएं मुझसे चिपककर मेरा रक्त चूस रही हैं!
ऐसा करने से ये जल्दी ही गल जाएंगी!
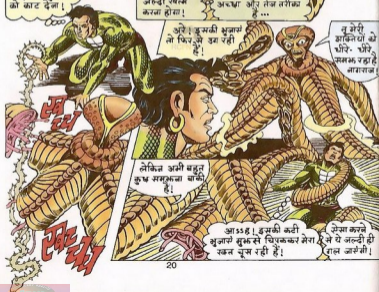
लेकिन तब तक मुझको कमजोर करने का काम कर जाएगी।
अब तो तेरा मरना तय है, नागराज! हम तो सर पर कफन बांधकर ही आए हैं! हमको मृत्यु का डर नहीं है। अब पनडुब्बी फटने से पहले न हम यहां से जाएंगे और न ही तू।
और तेरे मरने से जलसर्पों के सबसे बड़े दुश्मन का खात्मा हो जाएगा।
धड़क
आऽऽऽह! मैं जलसर्पों का सबसे बड़ा दुश्मन कबसे हो गया?
ये बाद में सोचूंगा! अभी तो इस मुसीबत से निपटने का तरीका सोचना है! अगर ये एक कैदी था, तो जलसर्प इसको कैद में कैसे रखते थे?
लोहे की दीवारों के तो ये आर-पार चला जाता है! ठोस चीजें इसका रास्ता रोक नहीं सकतीं!
लेकिन क्या इसकी ये शक्ति तरल माध्यम में भी काम करेगी?
इस ख्याल की जांच करनी पड़ेगी!
धड़ाम
ध्वंसक सर्पों के लगातार वारों ने धातु को पिघलाकर तरल बना दिया-

और नागराज को पता चल गया कि अष्टपाद सर्प को बंदी कैसे बनाया जा सकता है -
आहssss! मैं फंस गया हूं! तू ये राज कैसे जान गया नागराज कि मुझे तरल धातु द्वारा कैद किया जा सकता है!
इससे पहले मुझको पारे की दीवारों में कैद करके रखा जाता था, जिसको पार करने की कोशिश में मैं हर बार फंस जाता था!
नागराज! हमने इसके साथियों को भी कब्जे में कर लिया है!
शाबाश! अब ये हमको सच्चाई बताएगा! इसने अभी कहा था कि इसको यह काम दिया गया है! किसने दिया है तुमको यह काम?
नागराज! इसने परमाणु मिसाइलों का निशाना नागद्वीप पर सेट किया हुआ था! और इस वक्त नागद्वीप पर पूरी दुनिया के सर्पधिराज मौजूद हैं!
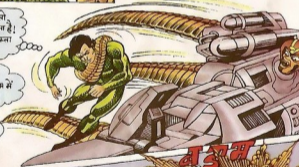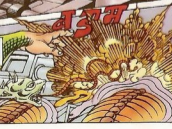
यानी कोई इन अपराधी सर्पों की मदद से पूरी दुनिया के सांपों के नेतृत्व को खत्म करना चाहता है! अब तो तुझे उसका नाम बताना ही पड़ेगा!
वर्ना तेरी जान जाएगी!
उसका और मेरा मकसद है नागराज! और उस मकसद के लिए मैं अपनी जान भी दे सकता हूं! वैसे ऐसा होगा नहीं!
क्योंकि जान तो तेरी जानी है! एक बार यह धातु ठंडी होकर ठोस हो जाए फिर मुझे आजाद होने में समय नहीं लगेगा!
और तेरी जान जाने में भी समय नहीं लगेगा!
नागराज! जल्दी चलो पूछताछ का समय नहीं है! अब ये सब मेरीन फटने में सिर्फ बीस सेकेंड बचे हैं! हमने इमर्जेंसी वेहिकल को स्टार्ट कर दिया है!
ठीक है! मैं इनमें से किसी एक सर्प को ले चलता हूं!
लेकिन... लेकिन इस षड्यंत्र का रहस्य जानना जरूरी है!
जिन्दा रहोगे तो रहस्य जानने के और भी रास्ते मिल जाएंगे! अभी चलो! कीमती सेकेंड बर्बाद हो रहे हैं!
वेहिकल में सिर्फ एक ही आदमी की जगह है!
भार बढ़ाया तो वेहिकल सतह तक नहीं पहुंच पाएगा!

'इमर्जेंसी वेहिकल के अलग होने के दस सेकंड बाद ही-
पनडुब्बी एक भीषण धमाके के साथ फट पड़ी-
मुझे उन जल नागों के मरने का अफसोस है! काश हम उनको बचा पाते!
ये सारी मुसीबत उनके ही कारण आई है! अब न जाने कब तक इस क्षेत्र का पानी रेडिएशन से प्रदूषित रहेगा!

इसी वक्त- एक अंजान स्थान पर-
नागराज ने हमारी योजना को चौपट कर दिया! अब हम जो भी योजना बनाएंगे उसको वह नष्ट कर देगा, क्योंकि अब वह सतर्क हो गया है!
अब हम कभी सफल नहीं हो सकते!
हमको सफल होना ही है!
क्योंकि अब हम और बर्दाश्त नहीं कर सकते! अब किसी ऐसी शक्ति का वार करना होगा जिसका जवाब नागराज के पास भी न हो!
नागद्वीप में-
विषांक! अब जिद छोड़ो, और सामने आ जाओ, विषांक!
मैं वादा करती हूं कि तुम्हारा राज्याभिषेक नागराज के आने के बाद ही होगा!
शेषनाग! राजकुमारी विसर्पी का प्रणाम स्वीकार करें देव!
अति सुंदर! हमको पता नहीं था कि नागसुंदरियां अप्सराओं को भी मात दे सकती हैं! सदैव सुखी रहो, कुमारी!
विषांक...
अह...
क्षमा करें!
धम
लेकिन देव, अगर आप यहां पर हैं तो पृथ्वी को कौन संभाले हुए है?
हमारे कई रूप हैं कुमारी विसर्पी! हमारा एक रूप यहां पर है, और दूसरा रूप धरा को संभाले हुए है! चिन्ता मत करो! पृथ्वी सागर में नहीं गिरेगी!

और नागद्वीप के एक अन्य कोने में-
अब अगर तुम भागे विषांक, तो मैं तुम्हारे पैरों में सर्प बेड़ी तब तक के लिए डाल दूंगा, जब तक तुम्हारा राज्याभिषेक न हो जाए!
इसका आश्वासन मैं नहीं दे सकता!
तो मैं भी कुछ पक्का नहीं कह सकता!
स्वीकार है! लेकिन आप भी शपथ लें कि बगैर नागराज के आए मेरा राज्याभिषेक नहीं होगा!
ओह! आप लोग अभी तक यहीं पर हैं! चलो, अच्छा हुआ!
मुझको तो लगा कि मुझे देर हो जाएगी!
जलसर्पराज महाव्याल! आप तो काफी पहले आ गए थे! फिर बीच में आप कहां चले गए थे?
कुछ समस्या सामने आ गई थी, महात्मन्! मैं उसी का समाधान करने सागर में गया था!
देखिए महात्मन्! कौन आया है!
ओहो! मैं धन्य हो गया देव! आपने यहां पर दर्शन देकर हमें कृतार्थ कर दिया!
कालदूत का प्रणाम स्वीकार करें देव शेषनाग!
और मेरा भी प्रणाम स्वीकार करें देव नाग!

धराधारक शेषनाग को नागराज का प्रणाम !
ओह ! तो तुम हो देव कालजयी के आशीर्वाद से जन्मे नागराज ! बड़ी इच्छा थी तुमसे मिलने की !
सुखी रहो वत्स !
नागराज !
अब मैं राज्याभिषेक के लिए एकदम तैयार हूं ! चलिए महात्मा कालदूत ! जल्दी चलिए न !
रुकें, महात्मा !
विसर्पी, तुम शेषनाग जी और विषांक को लेकर चलो !
मुझे आपसे कुछ जरूरी बात करनी है, महाव्याल ! और सौभाग्यवश आपके साथ-साथ महात्मा कालदूत भी यहां पर हैं ! ये भी सारी बात जान लें तो अच्छा होगा !
कैसी जरूरी बात, नागराज ?
आप मेरे साथ आइए देव शेषनाग !
मुझे पता था कि आप यहां पर अवश्य आएंगे ! इसीलिए मैं आपके लिए एक विशेष भेंट लेकर आया था !

समुद्र में पैदा होने वाली ये अत्यंत जहरीली और स्वादिष्ट जल-खुंभी!
ऐसा स्वाद आपने कभी चखा नहीं होगा। कृपया भोग लगाइए देव!
अवश्य, अवश्य!
एक तुम भी लो कुमार विषांक!
खा लूं दीदी?
हां, विषांक! तुम इसे खा सकते हो! ये नागों के लिए बहुत पौष्टिक होती है!
हम्म! यम्मी!
और पास में ही-
हम जानते हैं नागराज! इस घटना की सूचना पाकर ही हम अपने जलराज्य में वापस गए थे! समझ में नहीं आता कि मानवों पर आक्रमण करने का दुस्साहस उन्होंने क्यों किया?
मैंने नीरनागों यानी जलसर्पों को मानवों से दूर रहने की सख्त हिदायत दी है!
वे हमला मानवों पर नहीं कर रहे थे महाव्याल! वे उस पनडुब्बी के महासंहारी अस्त्रों का प्रयोग नागद्वीप पर करना चाहते थे!
और उनको किसी ने ऐसा करने का आदेश दिया था! इस षड्यंत्र में और कोई भी शामिल है, महाव्याल!
अब मैं समझा! यह हमला मुझ पर किया जाने वाला होगा! हमलावरों को यह पता था कि मैं इस वक्त नागद्वीप पर हूं!
मुझको पता करना होगा कि वह कौन गद्दार नीरनाग है, जो मुझको मारकर सागर राज्य को हथियाना चाहता है!

लेकिन अब तो वह समस्या टल गई है न! चलिए, महाव्याल! तुम भी आओ नागराज!
राज्याभिषेक का शुभ मुहूर्त बीता जा रहा है!
और फिर- वह समारोह प्रारंभ हो गया, जिसके लिए सारे ब्रह्मांड के नाग एकत्रित हुए थे-
अब मैं तुमको नागद्वीप का भावी शासक घोषित करता हूं विषांक! अब तुम समस्त नागों के स्वामी हो!
कुमार विषांक के युवा एवं बालिग होने तक नागद्वीप का संचालन मैं स्वयं करूंगा!
नागद्वीप का संचालन महात्मा करेंगे तो कुमारी विसर्पी क्या करेंगी?
अभी पता चल जाएगा! महात्मा जो कुछ करते हैं, सोच समझकर करते हैं!
जय हो!
कुमार विषांक की जय हो!

ठहरिए! ठहरिए! अभी एक शुभ समाचार और है!
आज कुमारी विसर्पी, नागद्वीप के प्रति अपने दायित्व से मुक्त हो गई है! और अब हमको भारतीय परंपरा का पालन करते हुए, बेटी को अपने घर से विदा करना है!
इसीलिए आज मैं... विसर्पी और नागराज की सगाई की घोषणा करता हूं!...
महात्मा क्या कह रहे हैं? मुझसे तो इन्होंने पूछा तक नहीं!
तुमको आपत्ति हो तो इंकार कर दो!
अभी भी समय है!
कुमारी विसर्पी की कुंडली के अनुसार विवाह का शुभ मुहूर्त दो दिन बाद ही है!
मैं आप सभी को इस विवाह में सम्मिलित होने के लिए सादर आमंत्रित करता हूं!
हम सभी अवश्य आएंगे, महात्मा कालदूत!
बल्कि अगर आप आदेश दें तो...
...हम दो दिनों तक यहीं पर रुकने को तैयार हैं SSS
आऽऽह!
देव! शेषनाग! ये आपको क्या हो रहा है?

पता नहीं! सिर हल्का-हल्का सा लग रहा है।
बोझ उठाने की आदत है न! इसलिए शायद ऐसे खाली बैठकर हल्का महसूस कर रहा हूं।
मुझे जाना होगा, पर दो दिनों बाद मैं आऊंगा जरूर!
जैसी आपकी इच्छा नागदेव!
ये आपने क्या किया, महात्मन्! कम से कम हमको इस घोषणा के बारे में बता तो दिया होता!
ताकि हम इस पर विचार-विमर्श करते और शुभ समय निकल आता? हमें तुम दोनों की स्थिति का पूरा ज्ञान है विसर्पी! और यह घोषणा मैंने तुम दोनों की इच्छा को ध्यान में रखकर ही की है!
अब मुझे भी आज्ञा दें महात्मन्! मुझे दादा वेदाचार्य और भारती को यह खुशखबरी सुनानी है, और उनको लेकर यहां पर आना है!
ठीक है नागराज! जाओ! समय बहुत कम है!
यानी अब मैं नागराज को क्या कहूंगा? जीजा नागराज?
हां, साले महाराज!
नागराज को इतना खुश कभी किसी ने नहीं देखा था-

भारती और वेदाचार्य ने भी नहीं-
यह तो अत्यंत खुशी का समाचार है, नागराज!
आज मुझको पहली बार अपनी आंखों में रोशनी न होने का अफसोस हो रहा है! तुम्हारे विवाह के दृश्यों को सिर्फ छायारूप के माध्यम से देखकर ही संतोष करना पड़ेगा!
मुझे तो इस बात की ज्यादा खुशी हो रही है कि मैं विसर्पी दीदी को दुल्हन के रूप में देखूंगी!
बस मुझको यह नहीं पता कि मैं अपने आपको दुल्हन के रूप में कब देखूंगी।
क्योंकि जिसको मैं मन ही मन अपना पति मान चुकी हूं वह विसर्पी दीदी की होने जा रहा है!
नागराज की एक नई जिन्दगी शुरू होने वाली थी-
ये कई लोगों का मानना है कि या तो विवाह के बाद एक नई जिन्दगी की शुरुआत होती है-
GOOD MAT

...या मौत के बाद-
कौन?
भारती! तुम यहां क्या कर रही हो?
ये हो क्या रहा है?
भूकंप आ रहा है नागराज!
लगातार कई झटके आ रहे हैं।
पर तुम तो घोड़े बेचकर सोए हुए थे! कितनी आवाजें दीं तुमको!
थैंक्स, भारती! तुम न बचाती तो मेरी नींद कभी न टूटती!
अब ज्यादा बोले, तो मैं तुम्हारे दांत तोड़ दूंगी!
पता नहीं भूकंप के ये लगातार झटके क्यों आ रहे हैं!
निकलो यहां से!

भूकंप के इन अनवरत झटकों का कारण यहां था-
नागद्वीप में-
ये क्या हो रहा है महात्मन्! भूखंड हिल रहे हैं! नागद्वीप का ज्वालामुखी राख उगल रहा है!
नागद्वीप नष्ट हो रहा है क्या?
नागद्वीप को मैंने बसाया है, विसर्पी! और जब तक मेरे अंदर साधना शक्ति है, तब तक नागद्वीप और इसके निवासियों को कोई नुकसान नहीं पहुंचेगा!
वैसे भी भूचाल लगातार आते नहीं रहते! जल्दी ही ये भूकंपन थम जाएगी!

ये भूकंपन नहीं थमेंगे, कालदूत! क्योंकि समस्त पृथ्वी के भूखंड धँस रहे हैं। लावे के समुद्र में समा रहे हैं!
देव शेषनाग! परंतु... परंतु आपके रहते ये कैसे हो रहा है?
क्योंकि अब हममें भूखंड को थाम सकने लायक क्षमता नहीं है! हमारा स्वास्थ्य खराब हो रहा है! अब भूखंडों को बचाना या न बचाना तुम पर निर्भर करता है!
मुझ पर? मैं शक्तिशाली जरूर हूं परंतु हममें भूखंडों को थामने की क्षमता नहीं है।

परंतु हमको थाम सकने की क्षमता तुममें है, कालदूत!
मैं आपका मतलब नहीं समझा, देव शेषनाग!
तो समझो! सुनो...
शेषनाग, कालदूत को अपनी बात समझाने लगा-
लेकिन शायद वह बात, कालदूत को समझ में नहीं आई-
ये असंभव है देव! मैं क्षमा चाहता हूं!
परंतु मैं ऐसा नहीं कर सकता।
हम मिलकर अपनी समस्या का कोई और निदान भी ढूंढ सकते हैं, देव!
इस समस्या का सिर्फ एक हल है और वह मैं तुमको बता चुका हूं, कालदूत!
अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो पृथ्वी पर जल के अलावा और कुछ भी नहीं रहेगा!
प्रलय आ जाएगी!
सवाल सिर्फ इतना है कि तुम मेरी बात अपने आप मानोगे या मुझे अपनी बात जबरदस्ती मनवानी पड़ेगी!
मैं आपकी बात नहीं मान सकता, देव! क्योंकि जो हो चुका है, उसको मैं वापस नहीं लौटा सकता!
तो फिर ये नागद्वीप नहीं रहेगा! नागद्वीप के निवासी नाग नहीं रहेंगे!
और सबसे पहले...
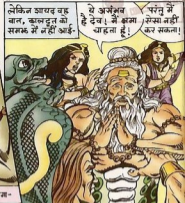
... तुम समाप्त होगे, कालदूत!
आह!
विसर्पी! तुम विषांक को लेकर यहां से जाओ! मैं नहीं चाहता कि तुम लोगों पर कोई खतरा आए!
लेकिन महात्मन् आप ... ? आप कैसे देव शेषनाग से निपट पाएंगे ?
और मैं जाऊंगी कहां ?
हमारी चिन्ता छोड़ो! बस जाओ यहां से!
और तुमको कहां जाना है यह तुमको पता है!

नागराज, महानगर में आए भूचाल के कारण हुए नुकसान का जायजा लेने के लिए निकल चुका था-
भूकंप से तो कुछ ही इमारतों को नुकसान पहुंचा है! लेकिन शायद इसी हलचल के कारण समुद्र का पानी शहर में घुस गया है!
लोगों को भूकंप से उतना नुकसान नहीं पहुंचा है जितना कि समुद्री बाढ़ से पहुंच रहा है!
बात नुकसान तक ही रहती तो फिर भी ठीक था-
लेकिन बात अब खतरे के स्तर तक आ पहुंची थी-
और जल के जीव, थल के जीवों पर भारी पड़ रहे थे-

शंखनाग
लेकिन ये संतुलन जल्दी ही बदल गया-
क्योंकि थलचरों का पलड़ा एकाएक भारी हो गया था-
नागराज आ गया था-
तड़क
नागराज! खैर तुमको तो आना ही था!
ये! ये मगर बोल कैसे पा रहा है!
क्योंकि मैं मगर नहीं हूं!
इसके तो दो-दो पूंछ हैं!
मैं घड़ियाल नाग हूं, नागराज! और मैं यहां पर तेरे लिए ही आया हूं!
किसी ने मुझे बताया था कि नागराज को बुलाना हो तो इंसानों पर हमला कर दो!
मेरे लिए! पर मुझसे तुम्हारी क्या दुश्मनी है?

कोई व्यक्तिगत दुश्मनी नहीं है! लेकिन हमारे मकसद से तुम्हारी दुश्मनी हो सकती है!
और हम तुमको अपना काम बिगाड़ने का मौका नहीं दे सकते!
गड़बड़!
कैसा काम? कौन सा मकसद? नीरनागों के मुंह से मैं यह बात दूसरी बार सुन रहा हूं!
अब नहीं सुनोगे! बल्कि आज के बाद तुम कुछ भी नहीं सुनोगे। घड़ियाल नाग तुमको मौत की नींद में सुला देगा!
आऽऽऽह! मैंने घड़ियाल नागों की शक्ति के बारे में सुना है! जल में इनकी शक्ति थल प्राणियों के मुकाबले सौ गुना ज्यादा होती है!
और मेरी शक्ति जल में आधी रह जाती है। क्योंकि मैं थल का प्राणी हूं!
मुझे इसको किसी भी तरह से खींचकर पानी से बाहर ले जाना होगा!
तभी मैं उस रहस्य की तह तक पहुंच पाऊंगा जो मैं पनडुब्बी पर हमला करने वाले नीरनागों से नहीं जान पाया था!

नागराज के लिए बचना उतना मुश्किल नहीं था जितना कि वार करना था-
... वैसे ही मैं तेरी बोटी-बोटी काट डालूंगा!
आऽऽऽ! इसके कांटे मेरे शरीर को काट रहे हैं!
आहा! तू इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग करके मुझसे बच तो सकता है, नागराज, पर छुप नहीं सकता! अब जैसे ही तू ठोस रूप में आएगा...
गड़ड़ड़ाऽऽऽह!
अब तो इसको विषदंश के प्रयोग से गलाकर मार डालने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है!
घड़ियाल की खाल में तो शेर के दांत भी नहीं घुस सकते। फिर तेरे दांत तो दूध के हैं!
और इनको भी मैं जल्दी ही तोड़ दूंगा!
43

आऽऽऽह! अब या तो इसके तेज कांटें मेरे शरीर को काट देंगे या फिर इसके वार मेरी हड्डियां तोड़ देंगे!
अब ये मुझको फिर से खींचकर किसी भी सहारे से दूर ले जाना चाहता है!
और मुझे इसको खींच कर पानी से बाहर ले जाना है! जहां पर मेरी शक्ति और इसकी शक्ति बराबर होंगी!
लेकिन पानी में घड़ियाल नाग की शक्ति, नागराज से कहीं ज्यादा थी-
एक रस्साकशी जैसा मुकाबला शुरू हो गया था-
आऽऽऽह!
आंखों के आगे अंधेरा छा रहा है! इसको पानी से खींच-कर बाहर ले जा पाना असंभव है!
टिंग
25

या... या नहीं!
ये आइडिया काम कर सकता है!
तू इस कमरे में घुसकर मुझसे बच नहीं सकता नागराज!
तू जहां जाएगा मैं तेरे पीछे आऊंगा!
लेकिन घड़ियाल नाग के उस 'कमरे' में घुसते ही नागराज बाहर निकल चुका था और दरवाजा बंद हो चुका था-
घड़ियाल नाग के भीषण वार द्वार पर बेतहाशा बरसने लगे-
अरे! अरे! तू मुझको कक्ष में बंद करके बचना चाहता है!
अरे, मैं जल्दी ही इस द्वार को तोड़ डालूंगा!

और द्वार टूट गया-
अरे! पानी बाहर कैसे निकल रहा है!
क्योंकि तुम इस 'कक्ष' यानी 'लिफ्ट' के जरिए सातवीं मंजिल पर आ चुके हैं, जहां पर पानी नहीं है!
ये आइडिया मुझको लिफ्ट का वह बटन देखकर आया था जो मेरे टकराने से ऑन हो गया था! इससे मुझको पता चल गया कि लिफ्ट में जरूर कोई ऐसा वाटरप्रूफ सिस्टम है जो उसे पानी के अंदर भी चालू रखे हुए है!
और यह पता चलते ही मैंने लिफ्ट की ताकत से घड़ियाल नाग को पानी से बाहर भेज दिया!
और अब पानी के बाहर हमारी शक्तियां बराबर हैं!
नागराज की विषफुंकार, सिर्फ पानी के अंदर पानी में घुल जाने के कारण बेअसर थीं- पानी के बाहर नहीं-

लेकिन खतरे अभी और भी थे-
अरे! ये क्या? एक सर्प नौका में बैठे कुछ सवार इधर आ रहे हैं! लेकिन कुछ नीरनाग उनको यहां पर पहुंचने से रोक रहे हैं!
और साथ ही साथ पानी का स्तर भी बढ़ता आ रहा है! आखिर इसका कारण क्या है?
मुझे सर्पनौका के सवारों को बचाना होगा! और यह भी पता करना होगा कि नीरनाग उनके पीछे क्यों पड़े हुए हैं!
नागराज! नागराज! मुझे बचाओ नागराज!
विसर्पी और विषांक! महानगर में! पर क्यों?
पहले मुझे इनको बचाना होगा!
लेकिन पानी में जाकर मैं नीरनागों से शायद न जीत सकूं!
इसीलिए ये लड़ाई मुझे पानी से बाहर लड़नी होगी!
और इनको पानी से बाहर निकालने के लिए मैं उसी तरीके का प्रयोग करूंगा जिस तरीके का प्रयोग वायु-सेना वाले समुद्र के अंदर छिपी पनडुब्बियों को बाहर निकालने के लिए करते हैं!
समुद्र के अंदर जाकर फटने वाले विस्फोटक यानी 'डेप्थचार्ज' का प्रयोग!
मेरे द्वारा छोड़े गए ध्वंसक सर्प पानी के अंदर जाकर फटेंगे!
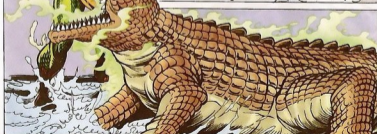
और धमाके से उछले हुए पानी के साथ नीरनाग भी उछलकर हवा में आ जाएंगे और इनसे निपटना आसान हो जाएगा !
आह! धन्यवाद नागराज !

और फिर-
क्या बात है विसर्पी ? तुम शादी की तैयारियां छोड़कर महानगर क्यों आ गई ? और ये नीरनाग तुम पर हमला क्यों कर रहे थे ?
ये मुझको रोककर वापस नागद्वीप ले जाना चाहते थे, नागराज!
कारण तुम्हारे आसपास दिख रहा है, नागराज!
भूखंड धीरे-धीरे धंस रहे हैं और समुद्र के पानी का स्तर बढ़ रहा है!
मुझको कुछ समझ में नहीं आ रहा है! पूरी बात शुरू से बताओ कि एक दिन में अचानक ऐसा क्या हो गया कि तुमको नागद्वीप से भागना पड़ा ?
और ऐसा इसलिए हो रहा है क्योंकि अचानक अस्वस्थ हो जाने के कारण शेषनाग अब भूखंड उठाने में अक्षम हैं!
समझ गया! यानी नागद्वीप पानी में डूब रहा है और इसीलिए तुम्हें नागद्वीप छोड़ना पड़ा! परन्तु अन्य नागद्वीप वासी कहां हैं ?
तुम कुछ नहीं समझे नागराज! देव शेषनाग को अब अपनी एक संतान की आवश्यकता है! ताकि वह नया युवा शेषनाग भूखंडों को संभाल सके!
इसके लिए वे विवाह करना चाहते हैं!
और उनके अनुसार पूरे ब्रह्मांड में सिर्फ एक ही ऐसी नागसुंदरी है जो उनकी संतान को जन्म देने के योग्य है!
तो इसमें समस्या क्या है ? वे उस नागसुंदरी से विवाह करके संतान को जन्म दे सकते हैं!

समस्या है, नागराज! क्योंकि उस नागसुंदरी का नाम राजकुमारी विसर्पी है! और उसकी सगाई उस नागराज के साथ हो चुकी है, जिसको वह मन ही मन अपना पति मानती है!
हे भगवान!
यानी... यानी...
यानी देव शेषनाग कुमारी विसर्पी से विवाह करना चाहते हैं!
इसीलिए मैंने विसर्पी को नागद्वीप से विवाह के साथ जाने को कहा था!
ये आपने बहुत अच्छा निर्णय लिया, महात्मन्!
अब मैं देव शेषनाग को समझा सकूँगा कि...
...कि विसर्पी से देव शेषनाग का विवाह होने में ही विश्व का भला है!
वर्ना पृथ्वी पर सिर्फ जल ही जल रहेगा!
थल और थलचर लुप्त हो जाएंगे!
मैंने वह निर्णय जल्दी-बाजी में लिया था, नागराज! परंतु देव शेषनाग के समझाने के बाद में इस निर्णय पर पहुंचा हूँ...
आप शेषनाग के बहकावे में आ गए हैं! मैं नागराज को अपना पति मान चुकी हूँ!
और नागसुंदरियां एक बार जिसको अपना पति मान लेती हैं, वे उसके अलावा किसी और से विवाह नहीं करतीं!
आखिर देव शेषनाग को ये पता कैसे चला कि उनका विवाह सिर्फ मुझसे ही हो सकता है!

ये देव शेषनाग के गुरू कोटिभुजंग ने शेषनाग को बताया है! उन्होंने तुम दोनों की कुंडली का अध्ययन किया है!
यह संभव नहीं है महात्मा कालदूत! अगर विसर्पी मुझको अपना पति मान चुकी है तो इसकी रक्षा करना अब मेरा कर्तव्य है!
धर्म के अनुसार आप किसी भी स्त्री का विवाह उसकी इच्छा के विरुद्ध नहीं कर सकते! और मैं धर्म का साथ दूंगा! अधर्म का नहीं!
तू मुझे अधर्मी कह रहा है, नागराज!
नहीं महात्मन्! मैं बस आपसे यह विनती कर रहा हूं कि अधर्म का साथ न दें!
देव शेषनाग की समस्या का हल कोई और भी तो हो सकता है!
जब एक हल सामने है तो हम दूसरे हल के बारे में सोचकर समय को व्यर्थ क्यों करें?
हमारा धर्म पृथ्वी के भूखंडों की रक्षा करना है! और उसके रास्ते में जो भी आयेगा वह मरेगा!
आऽऽऽह!

रुक जाइए महात्मा कालदूत! मैं नागाधिराज विषांक आपको आदेश देता हूं कि आप दीदी... मतलब कुमारी विसर्पी को छोड़कर तुरन्त नागद्वीप लौट जाएं!
ऐसा संभव नहीं है, महाराज! आपके राज्य की रक्षा करना मेरा फर्ज है और विसर्पी को शेषनाग तक ले जाकर मैं वही फर्ज पूरा कर रहा हूं!
वो कैसे महात्मा कालदूत?
वो ऐसे महाराज कि अगर विसर्पी का विवाह शेषनाग से न हुआ तो पूरी धरती जल में डूब जाएगी! नागद्वीप भी डूब जाएगा! फिर न रहेगा आपका राज्य और न रहेंगे आप कहीं के महाराज! मैं आपके राज्य की रक्षा तो कर ही रहा हूं!
तो फिर मेरा फर्ज भी सुन लीजिए, महात्मा कालदूत! अपने राज्य के साथ-साथ अपनी बहन की सुरक्षा करना भी मेरा फर्ज है!
ठहरो विषांक! नागराज के रहते तुमको अपने आपको खतरे में डालने की आवश्यकता नहीं है!
मेरे पास विसर्पी की सुरक्षा करने का एक दूसरा तरीका भी है!
मुझको क्यों खतरे में छोड़ रहे हो नागराज! मैं भी तुम्हारे शरीर में घुसकर ही सुरक्षित रहूंगा!
तुम एक इच्छाधारी नागिन हो विसर्पी! और हर इच्छाधारी नाग मेरे शरीर में समा सकता है!
मेरे शरीर में समा जाओ विसर्पी!
नागराज की मदद करने का यह अच्छा तरीका है! मैं भी इसके शरीर में घुस जाता हूं!
तूने ये काम करके अपनी मौत को बुला लिया है, नागराज!

अब तो तेरा शरीर फाड़कर उसमें रहने वाले हर नाग को आजाद कराना ही होगा!
क्या कहते हैं गुरुनाग ? क्या कालदूत विसर्पी को हम तक लाने में सफल हो पाएगा ?
कालदूत के सामने नागराज टिक नहीं सकता ! परन्तु अगर ऐसा न हुआ तो तुमको स्वयं जाना होगा शेषनाग! अन्यथा शेषनागों का वंश ही समाप्त हो जाएगा !

कालसर्पी तुझको दो टुकड़ों में चीर देगी नागराज, और मेरा त्रिशूल तुझे इससे बचने के लिए इच्छाधारी कणों में बदलने नहीं देगा!
आऽऽऽह! कालसर्पी पर मेरा वश नहीं चलेगा! और ये मुझको कुछ ही पलों में चीरकर रख देगी!
जो कुछ करना है वह जल्दी ही करना होगा! और इस वक्त सिर्फ एक ही काम किया जा सकता है!
ऊम
उससे ज्यादा समय की मुझे जरूरत भी नहीं है महात्मन्! क्योंकि उतनी ही देर में मैं कालसर्पी के इस छल्ले को आपकी गर्दन में डाल दूंगा!
तुझमें कमाल की नागशक्ति है नागराज! तू काल सर्पी की शक्ति से लड़ रहा है! इसको खींचकर अपने शरीर पर पड़ने वाले दबाव को रोक रहा है! पर ऐसा तू सिर्फ एक दो पलों के लिए ही कर पाएगा

अब अगर कालसर्पी ने मेरे शरीर को खींचने के लिए जोर लगाया तो मेरा शरीर चिरने से पहले आपकी गर्दन पिचक जाएगी!
और नागराज को इससे अच्छा मौका मिलने वाला नहीं था-
कालदूत के तीनों शरीर जुड़े होने के कारण एक पर भी हुए वार का असर तीनों शरीरों पर पड़ता था-
क्षमा करें महात्मा कालदूत!
वाह, नागराज! कालदूत से तुम शक्ति से नहीं जीत सकते थे! परंतु बुद्धि में वे तुमसे नहीं जीत पाए!
लेकिन महात्मा कालदूत ने ऐसा किया क्यों? पहले तो उन्होंने शेषनाग से तुम्हारी रक्षा करने का प्रयत्न किया! और फिर खुद तुमको शेषनाग के हवाले करने के लिए तैयार हो गए?
इसका कारण तो मुझको भी नहीं पता है, नागराज!
इसका कारण कालदूत का हमारे सम्मोहन के वश में होना है!

जब कालकूत ने हमारी बात को समझा ही नहीं और हमारी लड़ाई ज़रा लंबी खिंचने लगी तो समय को बचाने के लिए हमको उसे सम्मोहित करके भेजना पड़ा!
विसर्पी को रोकने के लिए जलसर्पों को भी हमने ही भेजा था।
देव शेषनाग!
हां! कालदूत के असफल हो जाने के बाद हमको विसर्पी को हासिल करने के लिए खुद ही आना पड़ा!
अगर तुमको पृथ्वी और इस पर रहने वाले थलचरों से प्यार है तो विसर्पी और हमारे बीच से हट जाओ, नागराज!
और हमको विसर्पी से विवाह करके शेषनाग वंश को आगे बढ़ाने दो!
हम दोनों ऐसा ही करेंगे देव! अवश्य करेंगे। हम अपने प्रेम का बलिदान देंगे! लेकिन सिर्फ तब...
...जब हमको इस बात का यकीन हो जाए कि आपकी समस्या का हल सिर्फ यही है, और कुछ नहीं!

है! इस समस्या का हल एक और है! और वह है तेरी मौत क्षुद्र मानव!
शेषनाग के पास पांच भिन्न भिन्न प्रकार के विनाशकारी विष हैं! और इनमें से हर विष में तुझको भयंकर पीड़ा देकर मारने की शक्ति है!
विष के बादल ने नागराज को घेर लिया और नागराज की खाल गलने लगी-
आऽऽऽह! ये भयंकर पीड़ा! ऐसा लग रहा है जैसे मेरा पूरा शरीर जलती मिर्च के अंगारों पर रखा हुआ है!

लेकिन तभी-
अरे! यह क्या? अब यह विष मेरें शरीर को नहीं जला रहा है!
बल्कि विष का यह बादल मेरे शरीर का स्पर्श भी नहीं कर पा रहा है!
यह कमाल कैसे हो गया?
यह कमाल नागराज के शरीर में मौजूद विषांक का था-
मैंने नागराज के शरीर के चारों तरफ मानसिक ऊर्जा का एक कवच चढ़ा दिया है! अब विष-बादल का स्पर्श नागराज के शरीर से नहीं हो सकता है!
मेरा नागराज के शरीर में घुसना काम आ गया!
तू मेरे 'विष घन' में घिरकर भी गल नहीं रहा है! कुछ अद्भुत शक्ति है तुझमें! तुझसे युद्ध करने में आनन्द आएगा नागराज! मुझे किसी अच्छे योद्धा से युद्ध किए हुए युगों बीत गए हैं!
विषवार तो तू बचा गया! लेकिन मेरी दूसरी शक्ति से कैसे बचेगा! गुरुत्त्व की शक्ति से!
मेरे पास गुरुत्त्वाकर्षण की वह मारक शक्ति है, जिसकी मदद से मैं भूखंडो को धारण किए रहता हूं!
परन्तु अभी इसका प्रयोग मैं भूखंड पर नहीं, जल पर करूंगा!

शेषनाग के एक इशारे पर जल के गोलों ने नागराज पर वार करना शुरू कर दिया-
आऽऽऽह! पानी के ये थपेड़े तो मेरी हड्डियों को तोड़ डालेंगे! और इसके तेज बहाव के सामने मैं इच्छाधारी कणों में बदलने का खतरा मोल नहीं लूंगा!
लेकिन खतरा तो अभी बढ़ने वाला था-
पानी के गोले नागराज के ऊपर एक-एक करके चिपकते जा रहे थे-
अब मैं गुरुत्त्व की शक्ति को बढ़ाऊंगा! और इस जल का तेरे शरीर पर दबाव इतना बढ़ जाएगा जितना समुद्र की सतह से हजार मीटर नीचे होता है!
और तेरा शरीर एक पतली सीप की तरह पिचक जाएगा!
ई आऽऽऽह! असहनीय दबाव है इस जल का। पूरा शरीर कागज के गोले की तरह दबता जा रहा है!

जल्दी ही मेरा शरीर अंडे की तरह फूट जाएगा! पर पानी को दूर हटाने लायक कोई भी शक्ति मेरे पास नहीं है!
या... शायद है!
और-
अरे! नीर-गोले में लहरें उठनी बंद हो गई हैं!
पर... क्यों?
क्योंकि आपका नीर-गोला...
... जम चुका है! धन्यवाद शीतनाग! तुमने सही समय पर मेरे मानसिक आदेश को सुनकर नीर गोले को जमा दिया!
आऽऽऽह! तूने मेरी दो शक्तियों को चुनौती देकर अपनी तरफ बढ़ने वाली मौत की गति को और तेज कर दिया है, नागराज!

अब शेषनाग का कहर तुमको राख कर डालेगा।
लावा!
बचना, नागराज!
चिन्ता मत करो विसर्पी! इस वार से बचने के लिए मुझको ज्यादा कुछ नहीं करना पड़ेगा!
सिर्फ पानी में कूदना पड़ेगा!
अपना ध्यान रखना, नागराज!
ध्यान रखने की खास जरूरत नहीं है, विसर्पी! पानी से संपर्क होते ही इस लावे की गर्मी निकल जाएगी!
अरे!
और जल्दी वापस...
उम्मम!
ये कैसा अद्भुत लावा है!
यह तो पानी के अंदर भी सुलग रहा है!

और... और ये मिसाइल की तरह मेरा पीछा भी कर रहा है!
और इसकी गति भी बहुत तेज है!
ईयाऊsss
नागराज को फिर एक बार विषांक की मदद की जरूरत आ पड़ी थी–
फिर एक बार किसी शक्ति ने मुझ तक आने वाली मुसीबत को रोक लिया है!
पर किसने?
लावा एक गोले के आकार में सिमट रहा है!
और यह गोला बड़ा होता जा रहा है!
ओह! बहुत शक्ति है आग के इस गोले में!
मैं इसको ज्यादा देर तक नहीं संभाल पाऊंगा!
ये कौन था? ऐसा लगा जैसे कि कोई मेरे दिमाग के अंदर से बोल रहा है!
लेकिन ये शक्ति जो भी है वह ज्यादा देर तक इस मुसीबत को नहीं रोक पाएगी! जल्दी ही लावा, गोले की कैद से आजाद हो जाएगा!
लेकिन उतनी देर में काफी कुछ किया जा सकता है!

शीतनाग! मेरे हाथों को ठंडा रखना! ताकि लावे का स्पर्श मेरे हाथों को नुकसान न पहुंचा सके!
मुझे अपने अदृश्य मददगार के थकने से पहले...
...और इस गोले के फटने से पहले...
...इसको सही जगह पर पहुंचा देना है!
फट गया लावे का गोला! और वह भी एकदम सही समय पर!
फटने के धमाके ने शेषनाग को उछालकर दूर फेंक दिया

ये लावा मुझको नुकसान नहीं पहुंचा सकता नागराज! क्योंकि मैंने अपना सारा जीवन लावे के समुद्र में ही खड़े रहकर भूखंडों को उठाए रखने में बिताया है!
लेकिन मैं तेरी प्रशंसा अवश्य करूंगा! तू पहला प्राणी है जिसने शेषनाग को गिराने में सफलता प्राप्त की है!
आपकी यह प्रशंसा मुझे आपसे युद्ध करने से रोक नहीं पाएगी देव!
परन्तु युद्ध का तो कारण ही समाप्त हो गया है!
क्या मतलब?
युद्ध का कारण... यानी विसर्पी!
विसर्पी! विसर्पी कहां है?
कालदूत उसको लेकर नागद्वीप पहुंच चुका है! अब हम भी चलते हैं!
क्योंकि जब तक हम नहीं पहुंचेंगे तब तक हमारा और विसर्पी का विवाह कैसे होगा?
मैं ऐसा नहीं होने दूंगा!
मैं आपको रोकने के लिए नागद्वीप तक आऊंगा!
तुम ऐसा नहीं कर पाओगे, नागराज! उधर देखो! सैकड़ों इच्छाधारी नाग सिर्फ तुमको रोकने के लिए ही इधर आ रहे हैं!
विदा, नागराज!
मुझको खेद है कि मैं अपने और विसर्पी के विवाह में तुमको आमंत्रित नहीं कर पाऊंगा!

शेषनाग अदृश्य होकर चले गए हैं! लेकिन मैं विसर्पी से उनका विवाह नहीं होने दूंगा! चाहे उन तक पहुंचने के लिए मुझको इच्छाधारी नागों के इस समुद्र को चीरकर जाना पड़े!
होश में आओ, नागराज! वरना मुझको शेषनाग को 'जीजा' कहना पड़ेगा! एक बार तुम इन सर्पों के चंगुल में गए तो विवाह पूरा होने से पहले कभी विसर्पी दीदी तक नहीं पहुंच पाओगे!
अभी हमको भागना पड़ेगा! छुपना पड़ेगा! हमको सोचने के लिए समय चाहिए! एकांत चाहिए!
तुम सही कह रहे हो विषांक! कुछ पलों के लिए मैं संयम खो बैठा था! आओ!
नागराज का यह प्रयास शायद काफी नहीं था-

क्योंकि नागद्वीप में विवाह की रस्में शुरू हो चुकी थीं-
आप लोग चाहे जितना ज़ोर लगा लो, परन्तु मैं इस विवाह को कभी स्वीकार नहीं करूंगी!
इस विवाह को पूरा नाग समाज स्वीकार कर रहा है! विसर्पी! और एक बार फेरे पूरे हो गए और शेषनागदेव ने तुम्हारी मांग में विष भर दिया तो फिर तुमको भी यह रिश्ता मानना ही पड़ेगा!
न फेरे होंगे और न ही मेरी मांग में शेषनाग के नाम का विष भरा जाएगा!
क्योंकि उससे पहले ही नागराज यहां पर आकर आप लोगों के मंसूबों पर पानी फेर देगा!
नागराज अब नागद्वीप पर कभी नहीं आएगा विसर्पी!
इस वक्त भी हज़ारों इच्छाधारी सर्प सिर्फ नागराज को ही ढूंढ रहे हैं ताकि उसको बंदी बनाया जा सके!
नागराज के लिए नागद्वीप पहुंचना तो दूर बाहर कदम रखना भी मुश्किल हो रहा था-
चारों तरफ हमारे दुश्मन इच्छाधारी सर्प फैले हुए हैं! ऐसे में हम भला नागद्वीप तक कैसे पहुंचेंगे नागराज?
नागद्वीप तक पहुंचना कोई समस्या नहीं है, विषांक!
समस्या है विवाह को रोकना! हमको उसका तरीका सोचना पड़ेगा!

विवाह को रोकना तो असंभव है! क्योंकि दूल्हा देव शेषनाग हैं! और देवताओं से हम नहीं जीत सकते!
सोचने की बात यह है विषांक कि देव शेष नाग को इतने युगों के बाद विवाह की इतनी जल्दी क्यों हो गई?
अरे! देवों को तो छोड़ो! हम तो शायद अपने पीछे लगे इन नीरनागों से भी नहीं जीत पाएंगे!
और नीरनागों का इस पूरी घटना से क्या संबंध है?
ये नीरनाग शुरू से ही हमारे पीछे पड़े हैं! पहले मैं पनडुब्बी में इनसे टकराया था! फिर इन्होंने महानगर में मुझ पर हमला किया!
तुमको और विसर्पी को मुझ तक पहुंचने से रोकने की कोशिश की! और अब ये फिर मुझको ढूंढते हुए घूम रहे हैं!
यानी नीरनागों का इस पूरे घटनाक्रम से गहरा संबंध है! पर वह संबंध हमको पता कैसे चलेगा?
देव शेषनाग के गुरू भी एक नीरनाग ही हैं, नागराज!
तब तो इस समस्या की कुंजी नीरनागों के पास ही है!
और वह कुंजी उनसे हासिल करके ही हम सफल हो सकते हैं!
पर नीरनाग हमको कुछ भी भला क्यों बताएंगे, नागराज?
बताएंगे, जरूर बताएंगे!
सागर की सतह से सैकड़ों मीटर नीचे-
हमारे कुछ योद्धा नीरनाग वापस आ गए हैं, महाव्याल!
और वे आपसे मिलना चाहते हैं!

योद्धा वापस आ गए हैं? कहां से वापस आ गए हैं? और मुझसे क्यों मिलना चाहते हैं?
पता नहीं, महाव्याल! आदेश दें तो उनको बुलाऊं आप उनसे ही पूछ लीजिएगा!
ठीक है! बुलाओ!
महाव्याल की जय हो!
घड़ियाल नाग! और घोड़सर्प! तुम लोग कहां से वापस आ रहे हो?
और क्या करके आ रहे हो?
हमारे प्राण बख्श दीजिए, महानीरनाग! हम महानगर जाकर नागराज को मारने में असफल रहे!
असफल रहे? नागराज को मारने में!
परन्तु नागराज को मारने तुम गए क्यों थे? किसने आदेश दिया था तुमको?
हमने दिया था!
महागुरू आप? आपने दिया था ये आदेश? पर क्यों?
हमने ही घड़ियाल नाग को यह आदेश दिया था! परन्तु हमको यह समझ में नहीं आया कि ये मूर्ख सूचना लेकर हमारे पास क्यों नहीं आया? तुम्हारे पास क्यों पहुंच गया?
परन्तु आपने बगैर हमसे सलाह किए ऐसा आदेश क्यों दिया?
क्योंकि तुम नीरनागों का हित भूल गए हो महाव्याल! इसीलिए हमको स्वयं यह कदम उठाना पड़ा!
तुमने जल के नागों को थल के नागों का गुलाम बना दिया है!

नागों का सम्राट हमेशा थलनागों के बीच से ही चुना जाता है! क्यों? क्योंकि तुम्हारे जैसे सम्राटों के कारण नीरनागों की शक्ति को कोई पहचानता ही नहीं है!
शांति में ही प्रगति है, और प्रगति में ही शक्ति है! शक्ति प्रदर्शन करने से नुकसान हम नागों का ही है! वैसे भी नागों पर राज नागद्वीप का सम्राट जरूर करता है, पर ऐसा वह हम सब नागों के साथ विचार-विमर्श करके करता है!
थलनागों को समाप्त करने की योजना! हमने तुम्हारे साथ समस्त थल नागों को एक साथ समाप्त करने की योजना बनाई थी!
इसके लिए हमने कारागृह में बंद नीरनागों का प्रयोग किया! उनसे मानवों के शस्त्र पर कब्जा कराया! एक बार वह शस्त्र चल जाता तो पूरा नागद्वीप सभी थलनागों के साथ नष्ट हो जाता!
पर नागराज ने यह योजना ध्वस्त कर दी!
ये व्यर्थ की बातें हैं! राजा, राजा ही होता है! इसीलिए जैसे ही हमको उस बालक विषांक के राज्याभिषेक की सूचना मिली, वैसे ही हमने यह योजना बना ली थी!
योजना? कैसी योजना?
सूचना मिलते ही हमने दूसरी योजना बनाई! और महामंत्री को एक घातक जलखुंभी के साथ तुरन्त नागद्वीप पर भेज दिया! ताकि वह उस खुंभी को शेषनाग को खिला दे!
शेषनाग को! पर शेषनाग को क्यों?
वह मंत्रित खुंभी थी! हमें पता था कि शेषनाग उसको खाकर कमजोर महसूस करने लगेगा! और शेषनाग के कमजोर होते ही भूखंड, पानी के नीचे डूबते जाएंगे! जब थल ही नहीं रहेगा तो थलनाग भी नहीं रहेंगे! और तब पृथ्वी पर नीरनागों का राज्य होगा!
तब तो आपकी योजना पर पानी फिर गया, महागुरू! इस वक्त शेषनाग का विवाह विसर्पी से हो रहा है! जल्दी ही नए शेषनाग का जन्म हो जाएगा और वह भूखंडों को संभाल लेगा!
ऐसा नहीं होगा, महाव्याल!

क्योंकि शेषनाग, विवाह पूरा होते ही मूर्च्छित हो जाएगा! और उसकी यह मूर्च्छा कभी नहीं टूटेगी! विसर्पी विधवा न होते हुए भी विधवाओं जैसा जीवन व्यतीत करेगी!
तब तो मुझे तुरन्त जाकर शेषनाग को इस षड्यंत्र के बारे में बताना होगा! ताकि वे समय रहते अपना इलाज कर सकें!
अरे! तुम सब मुझे क्यों पकड़ रहे हो?
बंदीगृह में तुम जाओगे! क्योंकि इस वक्त नीरनाग मेरे साथ हैं महाव्याल! ये रक्षक, घड़ियाल सर्प घोड़ा सर्प, सभी मेरे साथ हैं! यहां पर तुमको बचाने वाला कोई नहीं है!
और आप कारागृह की उसी कालकोठरी में जाएंगे महागुरू, जहां से आपने उन बंदियों को भगाया था!
रक्षकों, बंदी बना लो महागुरू को!
गलत महागुरू! महाव्याल को बचाने वाले हैं...
...हम हैं! और यहां हैं!
कौन हैं?
नागराज और उसका कोई दोस्त!
तो नीरनागों के वेष में तुमलोग थे! इसीलिए तुमको पता नहीं था कि तुमको किसके पास जाना था!

अच्छा ही है! अब तुमको मारने के लिए ढूंढने की जरूरत नहीं है! अब तुम यहीं पर मरोगे और हमारी योजना में कभी टांग नहीं अड़ा पाओगे!
नीरनागों की फौज तुमको चीरकर रख देंगे!
नीरनाग योद्धाओं!
तुम तो झोले के असरानी की तरह चिल्ला रहे हो! भूल गए कि नीरनाग योद्धा तो नागराज को ढूंढने के लिए बाहर गए हुए हैं!
अरे हां! लेकिन ये झोले और असरानी क्या होता है?
खैर! अभी भी हमारे पास इतने नीरनाग योद्धा मौजूद हैं जो तुमको मौत के घाट उतार सकें!
आप चाहें कुछ भी कहें महागुरू, लेकिन अब महाव्याल को तो हम शेषनाग के पास तक लेकर जाएंगे ही जाएंगे!

ये देखो नागराज! क्या तुम अभी भी समझते हो कि तुम इन सैकड़ों नीरनाग योद्धाओं को पार करके महाव्याल को यहाँ से सुरक्षित बाहर ले जा सकते हो?
सिर्फ महाव्याल को ही नहीं, मैं आपको भी यहां से बाहर ले जाऊंगा महागुरू! आखिर उस मंत्रित जलसुंभी का असर भी तो आपको ही काटना है!
पानी के अंदर तो एक नीरनाग ही तुम पर भारी पड़ेगा! यहां तो सैकड़ों नीरनाग हैं और तुम अकेले हो!
फिर भी तुम...
नागराज कभी अकेला नहीं होता महागुरू!
क्योंकि नागराज के शरीर में...

...हजारों इच्छाधारी सर्प वास करते हैं ! अब बताइए क्या आपके वीरनागों की सेना इनको पार करके हम तक पहुंच सकती है ?
चलिए महागुरू !
अ... आ... म... मा... म...
नागराज ने बड़ी चतुराई से कीमती समय को तो बचा लिया था-

लेकिन इससे कोई फायदा होने वाला नहीं था-
क्योंकि विवाह की अंतिम रस्म भी पूरी होने वाली थी-
फेरे पूरे हो चुके हैं। अब नागकन्या की माँग में अपना विष अर्पित, देव शेषनाग! और कुमारी विसर्पी को अपनी पत्नी बनाइए!
रुक जाइए, देव!
नागराज! तुम आखिर यहाँ तक पहुंच ही गए! लेकिन अब तुम हमारा विवाह नहीं रोक पाओगे!
मैं आपको ऐसा कोई भी काम करने से रोकना चाहता हूं देव, जिसको करने से आपको पश्चाताप करना पड़े!
क्या मतलब?
मतलब आपको नीरनागों के महागुरू समझाएंगे!
आखिर यही तो वे महान महागुरू हैं जिन्होंने आपको मंत्रित जलखुंभी खिलाकर कमजोर बनाया है!
क्या? यानी ये एक षड्यंत्र है! नीरनागों का षड्यंत्र!
मुझे पूरी बात विस्तार से बताओ!
बोलो महागुरू!
और पूरी बात सुनने के बाद-
हम बहुत शर्मिन्दा हैं विसर्पी! और तुम्हारे साथ-साथ हम नागराज से भी क्षमा चाहते हैं!
तुमने सचमुच हमको एक बड़े पाप से बचा लिया है!
मंत्र का असर कटने के बाद अब हम एकदम स्वस्थ महसूस कर रहे हैं!
हम उम्मीद करते हैं कि तुम दोनों हमको अपने विवाह में निमंत्रित अवश्य करोगे!

नीरनागों को उनके षड्यंत्र का दंड तो अवश्य मिलेगा, महात्मन्! परन्तु हमको उनकी समस्या का हल अवश्य ढूंढना पड़ेगा! वर्ना नीरनागों और भूनागों के बीच में कड़वाहट बढ़ती ही जाएगी!
इसके लिए हम नागद्वीप में नीरनागों के एक प्रतिनिधि को उचित स्थान देने को तैयार हैं! वे नीरनागों का प्रतिनिधित्व करेंगे और हमको उचित सलाह देंगे!
कुमार विषांक के राजा बनने के बाद अब किसी नाग के साथ अन्याय नहीं होगा...
नहीं, महात्मन्!
मैं राजा बनना नहीं चाहता हूं!
क्या नहीं, कुमार विषांक?
मैं नागद्वीप के शासक के पद को छोड़ रहा हूं, महात्मा!
पर क्यों विषांक?
क्योंकि मैं देख चुका हूं कि नागद्वीप के शासक की आज्ञा, आपकी और देवनागों की आज्ञा के सामने कुछ भी नहीं है! मैं ऐसा शासक नहीं बनना चाहता!
जब तक ये स्थिति नहीं बदलती नागसम्राट नहीं बनूंगा!
तुम ठीक कह रहे हो! हम ये स्थिति बदलने की कोशिश करेंगे! एक नया शासन तंत्र बनाएंगे!
पर अगर तुम शासक का पद छोड़ दोगे तो ये जिम्मेदारी फिर से कुमारी विसर्पी को ही उठानी पड़ेगी!
और ऐसी परिस्थिति में...

...नागराज और विसर्पी का विवाह...
...फिलहाल नहीं हो सकता है!
समाप्त.